Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on -- **विजयनगर कालीन समाज की विशेषताएँ।**

(for TDC Part 2 HISTORY HONOURS)

विजयनगर कालीन समाज की विशेषताएँ।

विजयनगर की सामाजिक संरचना में तीन प्रकार की विशेषताएँ थी-

विजयनगर समाज में दक्षिण भारतीय सामाजिक संरचन एवं सामाजिक संगठन के तत्व विद्यमान थे। प्राकृतिक क्षेत्रों एवं व्यवसाय के आधार पर समाज का क्षैतिज विभाजन इस काल में भी मिलता है।विजय नगर सामाजिक संरचना की विलक्षणता तीन स्तर पर थी ।

1. दक्षिण भारत के ब्राह्मणो की धर्म निरपेक्ष भूमिका- समाज में ब्राह्मणों का प्रथम स्थान था। ब्राह्मण धार्मिक कार्यों के अतिरिक्त धर्म निरपेक्ष कार्यों से भी जुड़े हुये थे। ब्राह्मण महत्त्वपूर्ण राजनैतिक पदों को सुशोभित करते थे। वे मंत्री, सेनानायक, दुर्ग रक्षक आदि पदों पर नियुक्त होते थे।

2. निचले सामाजिक समूहों में दोहरा विभाजन- निचले सामाजिक समूह दायाँ हाथ और बाएँ हाथ में विभाजित थे। दाएँ हाथ से जुड़ी हुई जातियाँ वैष्णव होती थी और बाएँ हाथ से जुड़ी हुई जातियाँ शैव होती थी। दाएँ हाथ से जुड़ी हुई जातियाँ कृषि उत्पादन तथा कृषि उत्पादों एवं स्थानीय व्यापार में संलग्न थीं जबकि बाएँ हाथ से जुड़ी जातियाँ गैर कृषि उत्पादन, व्यापार तथा शिल्प से संबद्ध थी।

3. समाज का क्षेत्रीय खंडीकरण: समाज के क्षेत्रीय खडीकरण से तात्पर्य समाज का प्राकृतिक उपक्षेत्रों में विभाजन अर्थात् एक क्षेत्र में निवास करने वाली जाति दूसरे क्षेत्र के उसी जाति से रक्त संबंध नहीं जोड़ पाती थी और इसी का स्वाभाविक परिणाम था कि दक्षिण में भाई-बहन और मामा-भांजी में वैवाहिक संबंध वर्जित थे। सुनारों, लोहारों एवं बढ़ईयों की हैसियत समाज में ऊँची

थी, किन्तु जुलाहा, कुम्हारों, तेलियों, कलालों और चमारों की हैसियत समाज में नीची थी।

ब्राह्मण जाति सर्वप्रमुख जाति थी। क्षत्रियों के विषय में जानकारी प्राप्त नहीं होती। मध्य वर्गों में शेट्टी या चेट्टी नामक एक बड़े समूह का उल्लेख मिलता है। चेट्टियों के ही समतुल्य व्यापार करने वाले तथा दस्तकार वर्ग के लोग थे उन्हें वीरपंचाल कहा जाता था। उत्तर भारत से एक बड़ा व्यापारिक समुदाय दक्षिण भारत में बस गया था जिन्हें बड़वा' कहा जाता था ।फलतः शेट्टियों के साथ इनकी प्रतिस्पर्धा बनी रहती थी और सामाजिक तनाव की स्थिति थी। चोलकालीन वलंगई एवं इडंगई वर्ग के रूप में निचले सामाजिक समूह का विभाजन हुआ था। यह विभाजन धर्म एवं व्यवस्था पर आधारित था। वलंगई वैष्णव एवं कृषि उत्पादन से संबद्ध जातियों का वर्ग था इन्हें ब्राह्मणों का समर्थन था। इलंगई वर्ग शैव एवं गैर कृषि उत्पाद तथा शिल्प उत्पादन से संलग्न थे। ये विशेषाधिकार विहीन वर्ग थे।

समाज में दास प्रथा प्रालत थी। स्त्री पुरुष दोनों को रास बनाया जाता था। दास दासी के क्रय-विक्रय को बेसवग कहा जाता था।

References: Internet & Competitive books.